
THE SON
FERDINANDO FREGA

बेटा

THE FAMILY · 13

एक पिता, जिनके तीन शब्द काफ़ी होते थे — और वह सुबह, अंतिम संस्कार के बरसों बाद, जब उनके बेटे ने वही शांति अपने ही मुँह से निकलती सुनी।

जिलेटनैरेटिव आपका स्वागत करता है। आप अभी नहीं जानते कि आप कितने ख़ुशक़िस्मत हैं — आपको कुछ मिलने वाला है, और बदले में किसी ने आपसे कुछ नहीं माँगा। अब आप मेरी दुनिया के भीतर क़दम रख रहे हैं, इतने क़रीब कि ब्लेड को छू सकें। लेकिन मैं ब्लेड नहीं बेचता। वह तो सिर्फ़ मेरी माँ का है। जब यह ख़त्म होगा, आप पहले जैसे नहीं रहेंगे। आप पहले से ही अगले की तलाश में होंगे। फ़िलहाल, यहीं से शुरू कीजिए। इस पल को अपना बना लीजिए।

मुझे मेरी माँ ने जन्म दिया, और एक बेटे के नाते मुझमें उनसे मिलता-जुलता होने की बहुत संभावनाएँ हैं। कम से कम चिकित्सा साहित्य तो यही कहता है, और इस बार मुझे असहमत होने की कोई वजह नहीं दिखती।

फिर भी, शारीरिक बनावट से परे, कुछ और भी है। कुछ ऐसा, जो बाद में आता है। वह बरसों के साथ ख़ुद को प्रकट करता है, उन निशानों में जो बचे रह जाते हैं, उसमें जो हम सचमुच हैं, न कि उसमें जो दूसरे होने का दावा करते हैं।

पहचान की शुरुआत भले किसी एक्स फ़ैक्टर से होती हो, पर कोई सचमुच नहीं जानता कि आनुवंशिकी कहाँ ख़त्म होती है और इंसानियत कहाँ शुरू होती है। डीएनए शरीर को समझाता है। बाक़ी सब ज़िंदगी समझाती है।

लोग कहते हैं कि बुद्धि माँ से आती है। आती है। लेकिन चरित्र किसी फ़ॉर्मूले से विरासत में नहीं मिलता। वह हाव-भाव, आदतों, फ़ैसलों और ख़ामोशियों से उभरता है। नैतिकता, स्वभाव, अंदाज़, मौजूदगी। एक इंसान की अदृश्य वास्तुकला।

और देर-सबेर कोई कह ही देता है: "यह तो बिल्कुल अपने पिता जैसा है।" सबको दिखता है। समझते बहुत कम हैं।

कोई बेटा पूरी तरह अपना पिता नहीं होता। कोई बेटी पूरी तरह अपनी माँ नहीं होती। हम सब एक बड़े खेल का हिस्सा हैं, जहाँ हैरानियाँ कभी ख़त्म नहीं होतीं। और फिर भी, मेरे मामले में, आख़िरी जवाब सीधा लगता था। सब कुछ पिता ही थे।

उस नफ़ीस आदमी ने कभी अपनी आवाज़ ऊँची नहीं की। जब वे बोलते, तो लगभग किसी गीत जैसा लगता, इतालवी, फ्रेंच और स्पैनिश का एक अनोखा मेल, जिसमें बस गिने-चुने शब्द होते। अक्सर तीन शब्द काफ़ी होते थे। "मैं यहाँ हूँ।"

बरसों तक हमने उन शब्दों को हल्के में लिया। फिर एक दिन असंभव आ खड़ा हुआ। और उस असंभव के सामने खड़े होकर वे मुस्कुराए और बोले: "बस एक डॉलर ही चुकाना पड़ता है।"

उस पल हमने समझा कि वे असल में कौन थे। वे मेरे पिता थे।

लेकिन असली रहस्योद्घाटन वह नहीं था। असली रहस्योद्घाटन बरसों बाद हुआ। एक सुबह मैंने ख़ुद को एक मुश्किल हालात का जवाब उसी शांति से देते सुना। बोलने से पहले वही ख़ामोशी। फ़ैसला करने से पहले वही मुस्कान। और एक पल को लगा जैसे वे कमरे में आ गए हों। फिर मुझे एहसास हुआ कि वे आए ही नहीं थे। वे कभी गए ही नहीं थे।

क्या बचा रहा? एक जाना-पहचाना चेहरा। एक आवाज़, जिसका सुर अलग था। एक व्यक्तित्व, जो आज भी समय के पार गूँजता है। क्योंकि हर संगीत में सबसे ज़्यादा मायने आवाज़ के नहीं होते। सुर के होते हैं। वह सुर जो बचा रहता है। वह सुर जो एक आत्मा को अपने साथ लिए चलता है।

और यही आख़िरी हैरानी थी। मैंने पूरी ज़िंदगी अपने पिता को अपनी यादों में ढूँढते हुए बिता दी। बस यह जानने के लिए कि वे तो हमेशा से मेरे फ़ैसलों के भीतर जी रहे थे।

वे बस मेरे पिता थे। और किसी तरह, आज भी हैं।

फर्दिनांदो फ्रेगा
जिलेट मैन ⚔️